परमात्म संदेश योजना

संस्थान की प्लेटिनम जुबली देश-विदेश में धूमधाम से मनाई गई, इसकी सबको मुबारक हो।

परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर निराकार सो साकार द्वारा पुन: आत्म-स्वमान द्वारा स्वर्णिम दुनिया बना रहे हैं। दूसरी ओर जहां चारों ओर दु:ख, अशांति व समस्याओं से घिरा मानव जिसे जीवन में एक पल की भी शांति नसीब नहीं है। ऐसे में जिन्होंने परमात्मा की छत्रछाया के आंचल के मध्य अपनी शक्तियों को जाना और पहचाना है। और परमात्मा के साथ का अनुभव संजोये ईश्वरीय सेवा कर रहे हैं। अब बाबा की आशा है कि आप सभी पूर्वज आत्माएं लोगों को दु:खों से मुक्त करो। और उन्हें यह संदेश दो कि जिसे आप याद कर रहे हैं वह स्वयं इस धरा पर आकर 'स्वर्णिम दुनिया' की स्थापना का दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं।

ऐसे में आप सभी ''ओम शांति मीडिया'' से जुड़े हर पाठक व ब्राह्मण आत्मा जो लाभ रहे हैं और अपने जीवन में खुशी, शक्ति तथा व्यवहार में सहजता का अनुभव कर रहे हैं। आप सभी इस लाभ को अपने पड़ोसी, दफ्तर, स्कूल, कॉलेज, सामाजिक संगठन, मित्र-सम्बन्धी, लौकिक परिवार को ईश्वरीय कर्त्तव्य का बोध कराना हमारा नीजी कर्त्तव्य बन जाता है। तो प्रिय पाठकों आपसे इस सेवा-कार्य को अपना उत्तरदायित्व समझ कम से कम पांच व्यक्तियों को सदस्य अवश्य बनाएं और ईश्वरीय संदेश को जन-जन तक पहुंचायें। ऐसी हमारी शुभ भावना व कामना है। यह बाबा ने कहा है कि आपके पड़ोसी तथा जहां भी आप रहते हैं शहर, गांव, कस्बे में परमात्मा का संदेश देकर आप इस ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनाएं। इसमें आप सिर्फ पाठक ही नहीं वरन् ईश्वरीय सेवा करने के निमित्त बन हर आत्मा को दिव्य ईश्वरीय कार्य के व्यापक समाचार तथा विचारों को प्रसारित करने में सहभागी बनें। और सम्बन्ध-सम्पर्क तथा खास आज तक जितने भी वी.आई.पी, आई.पी., मधुबन कॉन्फ्रेंस में तथा राजयोग शिविर में जो भाग लिए हैं, उन्हें बाबा के कार्य और सेवाओं की जानकारी सदा मिलती रहे।

आप सभी पाठकों का सुझाव व आपके ईश्वरीय जीवन के सुंदर अनुभव आमंत्रित हैं।

सहयोग के लिए धन्यवाद!

ईश्वरीय सेवा में
संपादक
ओम शांति मीडिया

भगवान कौन? के संदर्भ में हुई खुली चर्चा पर विशेष अगले अंक में..

सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ गीता सार, हैप्पीनेस इंडेक्स, कथा सारिता उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

सूचना

ओम शांति मीडिया में दो सेवाधारी की आवश्यकता है। जो कि कम्प्यूटर तथा हिन्दी व अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। वे शीघ्र ते शीघ्र अपना बायोडाटा नीचे दिए गये ई-मेल पर भेंजे या सम्पर्क कर सकते है। मोबाईल नंबर - 08107119445
Email-mediabkm@gmail.com

प्रश्न -बाबा के महावाक्यों में हमने सुना कि विनाशकाल में पाँचों विकार व पाँचों तत्व फुल फोर्स से आक्रमण करेंगे, हम इसका स्पष्टीकरण चाहते हैं तथा यह भी जानना चाहते हैं कि हम इनके उत्पात से कैसे बचे रह सकेंगे?

उत्तर - विनाश के दृश्य अति भयावह होंगे। पांचों तत्व एक साथ वार करेंगे, विचार करें - मुसलाधार बरसात हो रही हो, तेज तूफान भी चल रहा हो, जहाँ-तहाँ बिजली फेल हो जाए। घर में भोजन बनाने के लिए अग्नि या गैस आदि भी न रहे, घर से बाहर न निकल पायें तो क्या हाल होगा! आकाश से अग्नि बरसने लगे, बादल फटने लगे, भूकम्प, विनाश का ताण्डव नृत्य करने लगे, ऊँची-ऊँची इमारतें ताश के पत्तों की तरह गिरने लगे और मलबे में दबे लोग कई दिन भूखे-प्यासे, तड़फते हुए मृत्यु का इंतजार करते रहें। तब क्या होगा?

अधिक कष्ट उन्हें होगा जिन्होंने पाप बहुत किये हैं और जो विषय विकारों में बहुत आसक्त रहे हैं। उन्हें भगवान की भी मदद नहीं मिलेगी। मदद उन्हें मिलेगी जिनका पुण्य का खाता भरपूर होगा, जो ईश्वरीय आज्ञा का पालन करते होंगे, जिन्होंने ईश्वरीय कार्यों में बहुत मदद की होगी व जिनके पास स्वमान का व योग का बल होगा।

अभी से आप प्रकृति को प्रतिदिन दस मिनट पवित्र वायब्रेशन्स दें। विधि है - स्वयं को दो स्वमान में स्थित करें - मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ व प्रकृति का मालिक हूँ। बाबा से पवित्रता की सफेद किरणें मुझ पर पड़ रही है व मुझसे चारों ओर फैल रही हैं, प्रकृति उन्हें ग्रहण कर रही है। यदि आप प्रकृति की यह सेवा करेंगे तो प्रकृति आपको कष्ट नहीं देगी व विकराल काल में सब कुछ प्रदान करेगी।

पाँचों विकारों को जीतने के लिए बहुत योगाभ्यास करने की आवश्यकता है। विनाश काल में, वातावरण में काम वासना का प्रकोप होगा, मोह सतायेगा, क्रोध व अहंकार में वृद्धि हो जायेगी, लोभ मनुष्य को पीड़ित करेगा। ये सब मनुष्य को न सोने देंगे न सुख-चैन की श्वांस लेने देंगे। इनके कारण सम्बन्ध में कड़वाहट व शत्रुता पूर्ण हो जाएंगे। उसी समय चारों ओर दूषित वातावरण के कारण क्या होगा? काम वासना का छुपा अंश पुन: चिंगारी के प्रज्ज्वलित होने जैसा हो जायेगा और साधारण योगी उसके वश हो जाएंगे। न चाहते भी मन अशान्त रहेगा, तनाव बढ़ता जायेगा। इनसे बचने के लिए राजयोग की बहुत साधना करें। पवित्रता को बढ़ायें व निषाप बनें...अशरीरीपन व आत्मिक-दृष्टि का अच्छा अभ्यास करे। धुन लगे कि मुझे मायाजीत विजयी रत्न बनना ही है। साक्षीभाव व क्षमाभाव को अपनी नेचर बनायें तो आप सेफ रहेंगे।

प्रश्न - हमने ईश्वरीय महावाक्यों में सुना कि भयानक परिस्थितियों को केवल मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति वाले ही पार कर सकेंगे। परिस्थितियां उन्हें उमंग-उत्साह दिलाने वाली होंगी। ये मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति क्या है व इसे प्राप्त करने के लिए क्या-क्या करें?

उत्तर - राजयोग की सबसे शक्तिशाली स्थिति मास्टर सर्वशक्तिवान की है। इसका अर्थ है कि हम सर्व शक्तियों के मालिक बन जाते हैं, उन पर हमारा अधिकार हो जाता है, वे हमारे आदेश का पालन करती हैं। इसमें आत्मा निर्भय, बहुत शक्तिशाली, साक्षीदृष्टा व सरलचित्त हो जाती हैं।

जब हम मास्टर सर्वशक्तिवान का अभ्यास करते हैं तो शक्तियों की किरणें हमसे चारों ओर फैलती हैं, वे प्रकृति से मिलकर परिस्थितियों को हमारे अनुकूल बना देती हैं। इसके बार-बार के अभ्यास से परिस्थितियां नष्ट हो जाती हैं। हम स्वीकार कर लें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सर्वशक्तिवान बाप की समस्त शक्तियां मेरे पास हैं। इसकी स्मृति व नशे में रहें तो चारों ओर का वातावरण चार्ज होता रहेगा। प्रतिदिन सबेरे व रात्रि में सोने से पूर्व दस-दस बार ये अभ्यास करें

- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... परमात्म-शक्तियां मेरे पास हैं... ये शक्तियां मेरी हैं, इन पर मेरा अधिकार है, मैं माया से अधिक शक्तिशाली हूँ, विजयी रत्न हूँ, मैं परिस्थितियों से अधिक शक्तिशाली हूँ। उठते ही व सोते समय ये पावरफुल स्मृति लाने से मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति बनती जायेगी।

प्रश्न -बाबा ने ये भी कहा कि ऐसे विनाश के विकराल काल में ही विजयी रत्न प्रत्यक्ष होंगे। कृपया इसे और स्पष्ट करें।

उत्तर - इस सृष्टि की रचना अति सुंदर है। इसमें बाबा ने एक सौ आठ महानात्माओं को विभिन्न स्थानों पर रखा है। भारत में ये रत्न बहुत हैं, विदेशों में बहुत कम। आज भी उनकी अपने स्थान पर उपस्थिति, वहाँ की ईश्वरीय सेवाओं में वृद्धि का मुख्य आधार है। क्योंकि सेवा वृद्धि योग की व पवित्रता की शक्ति से ही होती है और ये विजयी रत्न इन दोनों में सम्पन्न होते हैं। ये अभी तक गुप्त है। विनाशकाल में विभिन्न स्थानों पर ये महान रत्न इष्ट देव-देवियों के रूप में दृष्टिगोचर होंगे, इनसे इष्ट देव-देवियों के साक्षात्कार होंगे। सभी अनुभव करेंगे कि हमारे इष्ट देव आ गये, हमारे सहारे दाता आ गये, हमारे मुक्तिदाता आ गये। इनसे किसी को फरिश्तों के साक्षात्कार होंगे, किसी को ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के। तब हाहाकार के साथ जयजयकार भी होगी।

अष्ट रत्न इनमें अग्रणी हैं। अष्ट रत्न माना बाप समान व निरंतर योगी। विजयी रत्न वे बनेंगे जो सम्पूर्ण पवित्र, सम्पूर्ण निरहंकारी, मैं व मेरेपन से मुक्त, सरलचित्त व संतुष्ट, सम्पूर्ण निर्भय व आठ घण्टा प्रतिदिन योगयुक्त रहेंगे।

प्रश्न - ईश्वरीय महावाक्यों में हमने ये भी सुना कि जो सम्पूर्ण निर्विकारी (वाइसलेस) व पापरहित बनेंगे वे ही विनाशकाल में बाबा की प्रेरणा को स्पष्ट कैच कर सकेंगे। परन्तु हमारे तो व्यर्थ संकल्प ही बहुत चलते हैं। हमारी कर्मेन्द्रियां भी शीतल नहीं हुई हैं। हमें ये स्थिति प्राप्त करनी है व व्यर्थ से मुक्त होना है। हम इसके लिए सबकुछ करने को तैयार हैं, कृपया हमें गाइड करें।

उत्तर - सम्पूर्ण निर्विकारी व पाप रहित स्थिति बहुत सुंदर है। ये शब्द ही कितने आकर्षक हैं। माया के सभी स्वरूपों से मुक्त, ईर्ष्या-द्वेष, दुर्भावना, घृणा-नफरत से मुक्त, जिसका चित्त शुभभावना सम्पन्न निर्मल हो गया है व जिसकी बुद्धि सद्ज्ञान से भरपूर है वे ही निर्विकारी हैं, वे निष्छल हैं, निष्काम हैं, सदा तृप्त हैं। इसके लिए लम्बाकाल की योगसाधना आवश्यक है।

अब अपने लक्ष्य को दृढ़ करें। केवल वही करना है जो केवल अब ही किया जा सकता है। हम वह सब कुछ कर लें, जो हम कर सकते हैं। हमें वो नहीं करना है जो अब ब्राह्मण बनकर हमें नहीं करना चाहिए - यह चिन्तन करें।

स्वदर्शन चक्रधारी बनें और अपने पांचों स्वरूपों का अभ्यास करें। इससे परदर्शन, परचिन्तन व अनेक व्यर्थ की बातों से बच जाएंगे। कम से कम पांच बार सबेरे व पांच बार शाम को ये अभ्यास अवश्य करें। इससे मन इतना आनंदित हो जाएगा कि उसका अन्यत्र कहीं आकर्षण ही नहीं रहेगा।

स्वयं को व्यर्थ से बचाना अपने हाथ में है। यह रहस्य भी याद रहे कि यदि अब यह बढ़ता रहा तो विनाश काल में ये दस गुणा हो जाएगा। तब इसे रोका नहीं जा सकेगा और ये धर्मराज की सजाओं का अनुभव करायेगा।

इसके लिए ज्ञान का बल, अमृतवेले के सुखद अनुभवों का बल, ईश्वरीय महावाक्यों का सुख व त्यागवृत्ति। दूसरों को देखना, टीवी देखना, फिल्म देखना, व्यर्थ बातें, करना बंद कर दें। यदि ये सब भी करते रहे तो ईश्वरीय सुख सिर्फ कल्पना बनकर ही रह जायेगा। याद रहे कि व्यर्थ व साधारण संकल्प भी अपवित्रता ही है। इन दोनों से मुक्त सदा एक के आकर्षण में रहने वाली आत्मा ही सम्पूर्ण निर्विकारी है व ऐसी पवित्रता ही पाप रहित है जो मन में भी किसी के लिए बुरा नहीं सोचती। लम्बी साधना से व अशरीरीपन से कर्मेन्द्रियां शीतल होंगी। हमारा मन व्यर्थ से मुक्त स्वस्थिति में रहेगा तब हम बाबा के इशारों को कैच कर सकेंगे। यदि मन व्यर्थ में व्यस्त रहेगा तो ईश्वरीय प्रेरणाएं प्राप्त ही नहीं होंगी।

रक्तचाप रहित....

पृष्ठ 6 का शेष

- नियमित खाने में रेशे, कच्चे फल और सलाद आदि का अभाव।
- श्रमहीन जीवन, व्यायाम का अभाव।
- पेट और मूत्र सम्बंधी पुरानी बीमारी।

उच्च रक्तचाप का निदान महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसके ठीक रहने से शरीर के सभी अंग सुचारू रूप से कार्य करते हैं। उच्च रक्तचाप धीमे जहर की तरह कार्य करता है। जिसके कारण शरीर के सभी अंग धीरे-धीरे खराब हो जाते हैं। कोलोन विश्वविद्यालय, जर्मनी में हुई एक शोध के अनुसार चॉकलेट खाने और काली व हरी चाय पीने से रक्तचाप नियंत्रण में रहता है। कनाडा के शोधकर्त्ता रॉस डी.फैल्डमैन के अनुसार उच्च रक्तचाप के रोगियों की विशेष देखभाल और जांच की जरूरत होती है। इससे दिल के दौरे की आशंका एक-चौथाई कम हो सकती है। वहीं मस्तिष्कघात की भी संभावना 40 प्रतिशत से कम हो सकती है। - क्रमश: